Concept of curriculum (पाठ्यक्रम की अवधारणा)

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में निरन्तर परिवर्तन एवं परिमार्जन होता है। व्यक्ति के व्यवहार में यह परिवर्तन अनेक माध्यमों से होते है, किन्तु मुख्य रूप से इन माध्यमों को दो रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

औपचारिक एवं अनौपचारिक औपचारिक रुप के अन्तर्गत ये माध्यम आते हैं जिनका नियोजन कुछ निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्यवस्थित ढंग से संस्थापित संस्थाओं में किया जाता है। इस प्रकार की संस्थाओं को विद्यालय कहा जाता है

, किन्तु व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन की प्रक्रिया विद्यालय एवं विद्यालयी जीवन में ही पूर्ण नहीं हो पाती है, बल्कि यह विद्यालय से बाहर तथा जीवन भर चलती रहती है। अतः व्यक्ति के व्यवहार में होने वाले

अनेक परिवर्तन विद्यालय की सीमा से बाहर की परिस्थितियों के परिणामस्वरूप होते है। चूंकि ऐसी परिस्थितियाँ सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत नहीं की जाती है, अतः ये अनौपचारिक माध्यम के अन्तर्गत आती है।

विद्यालय में विद्यार्थियों को जो कुछ भी कक्षा एवम् कक्षा के बाहर प्रदान किया जाता है, उसका एक निश्चित उद्देश्य होता है एवं उसे किसी विशेष माध्यम से ही पूरा किया जाता है। हमारी कुछ सकल्पनाएँ होती है कि एक विशेष कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद विद्यार्थी के व्यवहार में अमुक परिवर्तन आ जायेगा, परन्तु यह परिवर्तन किस प्रकार लाया जायेगा ? किसके द्वारा लाया जायेगा ? और कितना लाया जायेगा ? आदि ऐसे अनेक प्रश्न है, जिनका समाधान पाठ्यक्रम जैसे साधन से प्राप्त होता है। अत पाठ्यक्रम का सम्बन्ध शिक्षा के औपचारिक माध्यम से है

पाठ्यक्रम का अर्थ

(MEANING OF CURRICULUM)

पाठ्यक्रम शब्द अंग्रेजी भाषा के 'करीक्यूलम' (Curriculum) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। 'करीक्यूलम' शब्द लैटिन भाषा से अंग्रेजी में लिया गया है तथा यह लैटिन शब्द कुरैर से बना है। कुरैर का अर्थ है 'दौड़ का मैदान। दूसरे शब्दों में, 'करीक्यूलम' वह क्रम है जिसे किसी व्यक्ति को अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के लिए पार करना होता है। अतः पाठ्यक्रम वह साधन है, जिसके द्वारा शिक्षा व जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। यह अध्ययन का निश्चित एवंतर्कपूर्ण क्रम है. जिसके माध्यम से शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का विकास होता है तथा वह नवीन ज्ञान एवं अनुभव को ग्रहण करता है।

पाठ्यक्रम का संकुचित अर्थ

शिक्षा के अर्थ के बारे में दो धारणाये है पहली, प्रचलित अथवा सकुचित अर्थ और दूसरा संकुचित अर्थ में शिक्षा केवल स्कूली शिक्षा या पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित होती है, तदनुसार सकुचित अर्थ में पाठ्यक्रम भी केवल विभिन्न विषयों पुस्तककिए ज्ञान तक ही सीमित है

, पाठ्यक्रम का व्यापक अर्थ

विस्तृत अर्थ में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वह सभी अनुभव आ जाते हैं जिन्हें एक नई पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ियों से प्राप्त करती है। साथ ही विद्यालय में रहते हुए शिक्षक के संरक्षण में विद्यार्थी जो भी क्रियायें करता है, वह सभी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आती है तथा इसके अतिरिक्त विभिन्न पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाये भी पाठ्यक्रम का अग होती है।

अतः वर्तमान समय में पाठ्यक्रम' से तात्पर्य उसके विस्तृत स्वरूप से ही है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम

अध्ययन का ही एक क्रम है, जिसके अनुसार चलकर विद्यार्थी अपना विकास करता अतः यदि शिक्षा की तुलना दौड़ से की जाये तो पाठ्यक्रम उस दौड़ के मैदान के समान है जिसे पार करके दौड़ने वाले अपने निश्चित लक्ष्य तक पहुँच जाते है।

पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ (Definitions of Curriculurm)

कनिघम के अनुसार, "पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक साधन है, जिससे वह अपनी सामग्री (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श (लक्ष्य एवं उद्देश्य) के अनुसार अपनी चित्रशाला (विद्यालय) में ढाल सके ढाल सके।

Cunningham – "Curriculum is a tool in the hands of the artist (teacher) to mould his material (pupils) according to his ideas (aims and objectives) in his studio,the school

मुनरो -पाठ्यक्रम में वे सभी अनुभव सम्मिलित है जिन्हें शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विद्यालय प्रयोग में लाता है

Munroe – “Curriculum includes all those activities which are utilized by the school to attain the aims of education.

फ्रोबेल के अनुसार- पाठ्यक्रम को मानव जाति के संपूर्ण ज्ञान एवं अनुभवों का निचोड़ समझा जाना चाहिए

Froebel – “Curriculum should be conceived as an epitome of the rounded whole of the knowledge and experience of the human race.”

क्रो एंड करो के अनुसार पाठ्यक्रम मे सीखने वाले (विद्यार्थी) के वे सभी अनुभव सम्मिलित हैं जिन्हें विद्यालय के अंदर या बाहर प्राप्त करता है तथा जिन्हें उनके मानसिक शारीरिक सामाजिक आध्यात्मिक भावात्मक तथा नैतिक विकास के लिए बनाए गए कार्यक्रम में शामिल किया गया है|

Crow and Crow – The term curriculum includes all the learners' experience in or outside school that are areincluded in a programme which has been devised to help him developmentally, emotionally, socially, spiritually and morally".

माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर कमीशन) (1952-53) के अनुसार, "पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है, जो विद्यालय में परम्परागत ढंग से पढ़ाये जाते हैं, बल्कि इसमें बच्चों के वे सभी अनुभव निहित होते हैं, जिन्हें वे विद्यालय, कक्षा कक्ष में प्रयोगशाला में कार्यशाला में खेल के मैदान में तथा पुस्तकालय में प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे समस्त अनुभव आते है जो विद्यार्थियों को, अध्यापकों तथा अपने साथियों के औपचारिक तथा पारस्परिक सम्बन्धों से प्राप्त होते हैं। इस

प्रकार एक विद्यालय का पूरा जीवन ही, पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आ जाता है, जिसमें विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सभी पक्ष प्रभावित हो सकते हैं तथा यह उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के संतुलित विकास में सहायता हैं |

Curriculum does not mean only the academic subjects traditionally taught in the schools, but it includes totality of experiences that a pupil receives through the manifold activities that go on in the school, in the classroom library, laboratory. Workshop, playgrounds and in the numerous informal contacts between teachers and pupils. In this sense the whole life of school becomes the curriculum which can touch the life of the students at all points and help in the evolution of the balanced personality:" – Report of Secondary Education Commission, 1952-53